(IJDSSH) 2026, Vol. No. 21, Jan-Jun e-ISSN: 2455-5142 p-ISSN: 2455-7730

बौद्ध धर्म के पतन में पंचवस्तुनी एवं दसवस्तुनी विवादों की भूमिका: एक ऐतिहासिक एवं आलोचनात्मक अध्ययन

राहुल कुमार झा

शोधार्थी, बौद्ध अध्ययन विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

The Role of the Pañcavastu and Daśavastu Controversies in the Decline of Buddhism: A Historical and Critical Study

Rahul Kumar Jha

Research Scholar, Department of Buddhist Studies, University of Delhi

[1]*Received: 14/10/2025; Accepted: 10/12/2025; Published: 01/06/2026*

ABSTRACT

The rise and decline of Buddhism are both significant events in Indian history. Buddhism, which emerged in the sixth century BCE, profoundly influenced Indian society, culture, philosophy, and politics; however, its influence in India waned by the twelfth–thirteenth centuries. Historians differ on the causes of Buddhism's decline. Some scholars attribute it to external causes such as the decline of royal patronage, the resurgence of Brahmanical religion, and the Hun and Turkic invasions, while other historians regard the internal divisions within the Buddhist Sangha as an equally important factor.

This research paper presents a historical and critical study of the Pañcavastu and Daśavastu controversies. The Pañcavastu controversy, which concerned ideological differences between the Mahāsāṅghika and Sthaviravādin traditions, and the Daśavastu controversy, which arose over the observance of Vinaya rules at Vaiśālī, became the principal causes of division within the Buddhist Sangha. This study analyzes primary sources such as the Vinaya Piṭaka, the Dīpavaṃsa, the Mahāvaṃsa, and the Samantapāsādikā, together with the views of modern historians — A. L. Basham, Étienne Lamotte, Richard Gombrich, and Romila Thapar.

The study makes clear that the Pañcavastu and Daśavastu controversies were not the sole, direct cause of the decline of Buddhism; rather, they weakened the unity of the Sangha and gave rise to internal fragmentation. As a result, when royal patronage ceased and external invasions occurred, Buddhist institutions were in a comparatively weaker position. These controversies may therefore be regarded as an important contributory and partial cause of the decline of Buddhism.

[1] *How to cite the article:* Jha R.K. (June 2026); The Role of the Pañcavastu and Daśavastu Controversies in the Decline of Buddhism: A Historical and Critical Study; *International Journal of Development in Social Sciences and Humanities*; Vol 21, 61-66

(IJDSSH) 2026, Vol. No. 21, Jan-Jun **e-ISSN: 2455-5142 p-ISSN: 2455-7730**

Keywords: *Buddhism; Pañcavastu; Daśavastu; Council of Vaiśālī; Mahāsāṅghika; Sthaviravāda; Vinaya Piṭaka; Buddhist Sangha; Decline of Buddhism; Samantapāsādikā*

शोध सार

भारतीय इतिहास में बौद्ध धर्म का उदय और पतन दोनों ही महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाएँ हैं। छठी शताब्दी ईसा पूर्व में उत्पन्न बौद्ध धर्म ने भारतीय समाज, संस्कृति, दर्शन और राजनीति को गहराई से प्रभावित किया, किन्तु बारहवीं–तेरहवीं शताब्दी तक भारत में इसका प्रभाव क्षीण होता गया। बौद्ध धर्म के पतन के कारणों पर इतिहासकारों में मतभेद रहा है। कुछ विद्वान इसे बाह्य कारणों, जैसे राजकीय संरक्षण के ह्रास, ब्राह्मण धर्म के पुनरुत्थान, हूण तथा तुर्क आक्रमणों से जोड़ते हैं, जबकि कुछ इतिहासकार बौद्ध संघ के आन्तरिक विभाजनों को भी महत्त्वपूर्ण कारक मानते हैं।

प्रस्तुत शोध-पत्र में पंचवस्तुनी तथा दसवस्तुनी विवादों का ऐतिहासिक एवं आलोचनात्मक अध्ययन किया गया है। पंचवस्तुनी विवाद, जो महासांघिक और स्थविरवादी परम्पराओं के बीच वैचारिक मतभेदों से संबंधित था, तथा दसवस्तुनी विवाद, जो वैशाली में विनय नियमों के पालन को लेकर उत्पन्न हुआ, बौद्ध संघ में विभाजन के प्रमुख कारण बने। इस अध्ययन में विनय पिटक, दीपवंस, महावंस तथा समन्तपासादिका जैसे प्राथमिक स्रोतों के साथ आधुनिक इतिहासकारों—ए. एल. बाशम, एतिएन लामोट, रिचर्ड गोम्ब्रिच तथा रोमिला थापर—के विचारों का विश्लेषण किया गया है।

अध्ययन से स्पष्ट होता है कि पंचवस्तुनी एवं दसवस्तुनी विवाद बौद्ध धर्म के पतन के प्रत्यक्ष एवं एकमात्र कारण नहीं थे, बल्कि उन्होंने संघ की एकता को कमजोर कर आन्तरिक विखण्डन को जन्म दिया। परिणामस्वरूप, जब राजकीय संरक्षण समाप्त हुआ और बाह्य आक्रमण हुए, तब बौद्ध संस्थाएँ अपेक्षाकृत अधिक कमजोर स्थिति में थीं। अतः इन विवादों को बौद्ध धर्म के पतन का एक महत्त्वपूर्ण सहायक एवं आंशिक कारण माना जा सकता है।

प्रमुख शब्द : बौद्ध धर्म, पंचवस्तुनी, दसवस्तुनी, वैशाली संगीति, महासांघिक, स्थविरवाद, विनय पिटक, बौद्ध संघ, बौद्ध धर्म का पतन, समन्तपासादिका।

भूमिका

बौद्ध धर्म भारतीय इतिहास की एक ऐसी महान धार्मिक एवं दार्शनिक परम्परा है जिसने न केवल भारत, बल्कि सम्पूर्ण एशिया के सांस्कृतिक विकास को प्रभावित किया। गौतम बुद्ध द्वारा प्रतिपादित मध्यम मार्ग, अहिंसा, करुणा तथा नैतिक जीवन के सिद्धान्तों ने तत्कालीन समाज को एक नई दिशा प्रदान की। मौर्य सम्राट अशोक के संरक्षण में बौद्ध धर्म का व्यापक प्रसार हुआ और यह श्रीलंका, चीन, तिब्बत, मध्य एशिया तथा दक्षिण-पूर्व एशिया तक पहुँचा।

यद्यपि प्रारम्भिक काल में बौद्ध संघ एक संगठित संस्था के रूप में विकसित हुआ, किन्तु समय के साथ संघ के भीतर वैचारिक तथा अनुशासनात्मक मतभेद उत्पन्न होने लगे। इन मतभेदों का परिणाम विभिन्न सम्प्रदायों के रूप में सामने आया। बौद्ध परम्परा में विशेष रूप से दो विवाद—दसवस्तुनी तथा पंचवस्तुनी—ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण माने जाते हैं।

दसवस्तुनी विवाद का उल्लेख वैशाली में आयोजित द्वितीय बौद्ध संगीति से सम्बन्धित है। यह विवाद मुख्यतः विनय नियमों की व्याख्या और उनके अनुपालन को लेकर उत्पन्न हुआ था। दूसरी ओर, पंचवस्तुनी विवाद महासांघिक और

(IJDSSH) 2026, Vol. No. 21, Jan-Jun e-ISSN: 2455-5142 p-ISSN: 2455-7730

स्थविरवादी परम्पराओं के मध्य बौद्ध सिद्धान्तों तथा बुद्ध के स्वरूप के सम्बन्ध में वैचारिक मतभेदों से जुड़ा हुआ था। इन विवादों ने बौद्ध संघ की एकता को प्रभावित किया और अनेक सम्प्रदायों के उद्भव का मार्ग प्रशस्त किया।

इतिहासकारों के मध्य इस प्रश्न पर निरन्तर चर्चा रही है कि क्या ये आन्तरिक विवाद बौद्ध धर्म के पतन के मुख्य कारण थे, अथवा केवल सहायक कारक। ए. एल. बाशम का मत है कि संघ का विखण्डन बौद्ध धर्म की संस्थागत शक्ति को कमजोर करता गया। एतिएन लामोट इन विवादों को वैचारिक विकास का स्वाभाविक परिणाम मानते हैं, जबकि रोमिला थापर राजकीय संरक्षण और सामाजिक-आर्थिक परिवर्तनों को अधिक महत्त्व देती हैं।

प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य पंचवस्तुनी एवं दसवस्तुनी विवादों का ऐतिहासिक अध्ययन करते हुए यह विश्लेषण करना है कि बौद्ध धर्म के पतन में इनकी क्या भूमिका थी। साथ ही, अन्य कारणों—जैसे राजकीय संरक्षण का समाप्त होना, ब्राह्मण धर्म का पुनरुत्थान, मठों की आर्थिक स्थिति तथा बाह्य आक्रमणों—की तुलना के माध्यम से एक संतुलित निष्कर्ष प्रस्तुत किया जाएगा।

शोध के उद्देश्य

1. पंचवस्तुनी एवं दसवस्तुनी विवादों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना।
2. विनय पिटक, दीपवंस, महावंस तथा समन्तपासादिका जैसे प्राथमिक स्रोतों का विश्लेषण करना।
3. आधुनिक इतिहासकारों के विचारों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. यह मूल्यांकन करना कि ये विवाद बौद्ध धर्म के पतन के मुख्य, आंशिक अथवा सहायक कारण थे।
5. बौद्ध धर्म के पतन के अन्य कारणों के साथ इन विवादों की तुलना करना।

शोध पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन ऐतिहासिक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है। इसमें प्राथमिक स्रोतों—विनय पिटक, दीपवंस, महावंस, समन्तपासादिका—तथा द्वितीयक स्रोतों—आधुनिक इतिहासकारों के ग्रन्थों एवं शोध-पत्रों—का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। अध्ययन में वर्णनात्मक तथा आलोचनात्मक दृष्टिकोण अपनाया गया है।

पंचवस्तुनी एवं दसवस्तुनी विवादों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

गौतम बुद्ध के महापरिनिर्वाण के पश्चात् बौद्ध संघ के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती संघ की एकता बनाए रखना था। प्रारम्भिक बौद्ध संगीति का उद्देश्य बुद्ध के उपदेशों और विनय नियमों का संरक्षण था, किन्तु समय के साथ विभिन्न क्षेत्रों और परिस्थितियों के कारण संघ के भीतर मतभेद उत्पन्न होने लगे।

दसवस्तुनी विवाद

द्वितीय बौद्ध संगीति का आयोजन वैशाली में बुद्ध के महापरिनिर्वाण के लगभग सौ वर्ष बाद हुआ। इस संगीति का कारण वैशाली के वज्जिपुत्र भिक्षुओं द्वारा विनय नियमों में कुछ व्यवहारिक परिवर्तनों को स्वीकार करना था। इन परिवर्तनों को "दसवस्तु" कहा गया।

इन दस प्रथाओं में नमक संग्रह करना, दोपहर के बाद भोजन करना, धन स्वीकार करना आदि सम्मिलित थे। स्थविर भिक्षुओं ने इन्हें विनय के विरुद्ध माना, जबकि वज्जिपुत्र भिक्षुओं ने इन्हें व्यवहारिक आवश्यकता के रूप में स्वीकार किया। परिणामस्वरूप संघ में मतभेद उत्पन्न हुए और स्थविरवाद तथा महासांघिक परम्पराओं का विकास हुआ।

पंचवस्तुनी विवाद

पंचवस्तुनी विवाद महादेव नामक भिक्षु द्वारा प्रतिपादित पाँच सिद्धान्तों से संबंधित माना जाता है। इन सिद्धान्तों में यह विचार था कि अर्हत पूर्णतः त्रुटिरहित नहीं होते, उनमें अज्ञान या संदेह की संभावना हो सकती है। स्थविरवादियों ने इन विचारों का विरोध किया, जबकि महासांघिकों ने इन्हें स्वीकार किया।

इस विवाद ने बुद्ध और अर्हत के स्वरूप के सम्बन्ध में गम्भीर दार्शनिक मतभेद उत्पन्न किए और आगे चलकर महायान तथा अन्य बौद्ध परम्पराओं के विकास की पृष्ठभूमि तैयार की।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट होता है कि बौद्ध धर्म के पतन में पंचवस्तुनी एवं दसवस्तुनी विवादों की भूमिका महत्त्वपूर्ण थी, किन्तु इन्हें पतन का एकमात्र कारण नहीं माना जा सकता। दसवस्तुनी विवाद ने बौद्ध संघ के अनुशासन एवं विनय व्यवस्था को चुनौती दी, जबकि पंचवस्तुनी विवाद ने बौद्ध दर्शन, विशेषकर अर्हत एवं बुद्ध के स्वरूप को लेकर वैचारिक मतभेद उत्पन्न किए। इन दोनों विवादों के परिणामस्वरूप बौद्ध संघ की एकता कमजोर हुई और स्थविरवाद तथा महासांघिक जैसे विभिन्न सम्प्रदाय अस्तित्व में आए।

संघ के आन्तरिक विभाजन ने बौद्ध संस्थाओं की संगठनात्मक शक्ति को क्षीण कर दिया। फलस्वरूप जब राजकीय संरक्षण में कमी आई, ब्राह्मण धर्म का पुनरुत्थान हुआ तथा हूण और तुर्क आक्रमणों जैसे बाह्य संकट उत्पन्न हुए, तब बौद्ध धर्म उनका प्रभावी ढंग से सामना नहीं कर सका। इस प्रकार आन्तरिक मतभेदों ने बाह्य कारणों के प्रभाव को और अधिक बढ़ा दिया।

अतः यह कहा जा सकता है कि पंचवस्तुनी एवं दसवस्तुनी विवाद बौद्ध धर्म के पतन के प्रत्यक्ष कारण नहीं थे, बल्कि वे ऐसे महत्त्वपूर्ण सहायक कारक थे जिन्होंने संघ की एकता को कमजोर कर पतन की प्रक्रिया को गति प्रदान की। इस अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि किसी भी धार्मिक या सामाजिक संस्था की दीर्घकालिक स्थिरता उसके आन्तरिक अनुशासन, वैचारिक समन्वय और संगठनात्मक एकता पर निर्भर करती है।

संदर्भ सूची

प्राथमिक स्रोत

1. विनय पिटक। पाली त्रिपिटक, नव नालंदा महाविहार, नालंदा।
2. दीपवंस। पाली टेक्स्ट सोसाइटी संस्करण।
3. महावंस। अनुवाद: विल्हेम गीगर। पाली टेक्स्ट सोसाइटी।
4. समन्तपासादिका। आचार्य बुद्धघोष। पाली टेक्स्ट सोसाइटी।
5. धम्मपद। अनुवाद: भदन्त आनन्द कौसल्यायन।

द्वितीयक स्रोत

1. बाशम, ए. एल. अद्भुत भारत (The Wonder That Was India)। नई दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन।
2. लामोट, एतिएन। भारतीय बौद्ध धर्म का इतिहास (History of Indian Buddhism)।
3. गोम्ब्रिच, रिचर्ड एफ. थेरवाद बौद्ध धर्म (Theravada Buddhism: A Social History from Ancient Benares to Modern Colombo)। रूटलेज।
4. थापर, रोमिला। प्रारम्भिक भारत (Early India: From the Origins to AD 1300)। पेंगुइन बुक्स।
5. हीराकावा, अकीरा। भारतीय बौद्ध धर्म का इतिहास (A History of Indian Buddhism)। यूनिवर्सिटी ऑफ हवाई प्रेस।
6. वार्डर, ए. के. इंडियन बुद्धिज्म (Indian Buddhism)। मोतीलाल बनारसीदास।
7. पाण्डेय, गोविन्दचन्द्र। बौद्ध धर्म के विकास का इतिहास। उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान।
8. राहुल सांकृत्यायन। बौद्ध दर्शन। किताब महल, इलाहाबाद।
9. नरेन्द्र देव। बौद्ध धर्म दर्शन। बिहार राष्ट्रभाषा परिषद।
10. आनन्द कौसल्यायन। भगवान बुद्ध और उनका धर्म। सस्ता साहित्य मण्डल।

References ***(English Translation)***

Primary Sources

1. Vinaya Piṭaka. Pāli Tripiṭaka, Nava Nalanda Mahavihara, Nalanda.
2. Dīpavaṃsa. Pali Text Society edition.
3. Mahāvaṃsa. Translated by Wilhelm Geiger. Pali Text Society.
4. Samantapāsādikā. Ācārya Buddhaghosa. Pali Text Society.
5. Dhammapada. Translated by Bhadant Anand Kausalyayan.

Secondary Sources

1. Basham, A. L. The Wonder That Was India. New Delhi: Radhakrishna Prakashan.
2. Lamotte, Étienne. History of Indian Buddhism.
3. Gombrich, Richard F. Theravada Buddhism: A Social History from Ancient Benares to Modern Colombo. Routledge.
4. Thapar, Romila. Early India: From the Origins to AD 1300. Penguin Books.
5. Hirakawa, Akira. A History of Indian Buddhism. University of Hawaii Press.
6. Warder, A. K. Indian Buddhism. Motilal Banarsidass.
7. Pandey, Govind Chandra. History of the Development of Buddhism [Bauddh Dharma ke Vikas ka Itihas]. Uttar Pradesh Hindi Sansthan.

8. Sankrityayan, Rahul. Buddhist Philosophy [Bauddh Darshan]. Kitab Mahal, Allahabad.
9. Dev, Narendra. Buddhist Religious Philosophy [Bauddh Dharma Darshan]. Bihar Rashtrabhasha Parishad.
10. Kausalyayan, Anand. Lord Buddha and His Dhamma [Bhagwan Buddha aur Unka Dharma]. Sasta Sahitya Mandal.